श्री नरेन्द्र सिंह
मा० कृषि मंत्री, बिहार

बिहार सरकार

कृषि विभाग

श्री जीतन राम मांझी
मा० मुख्यमंत्री, बिहार

किसान जागरूकता महाअभियान-सह-रबी महोत्सव 2014

तीसी की उन्नत खेती

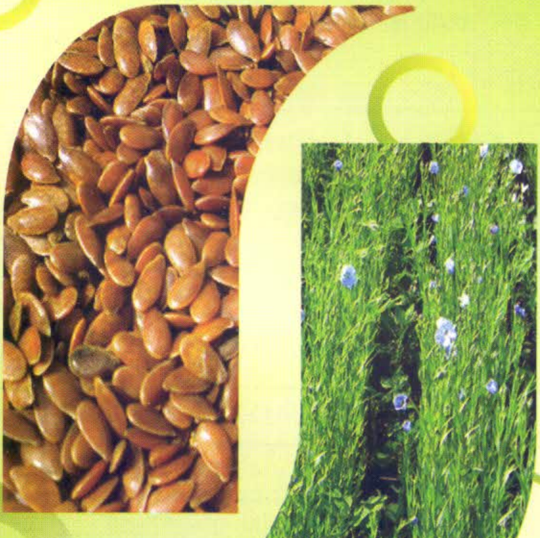

प्रकाशक :

डॉ० वेद नारायण सिंह, परियोजना निदेशक

कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा)

कृषि भवन, पुलिस लाईन परिसर, दिग्घी, हाजीपुर (वैशाली)

दूरभाष : 94710 02687

तीसी की उन्नत खेती

परिचय :

खरीफ की तेलहनी फसलों में तीसी का मुख्य स्थान है। इसकी खेती एकल फसल के रूप में अथवा मिश्रित फसल के रूप में कर सकते हैं।

- **भूमि का चुनाव :** इसकी खेती भटिया एवं दोमट मिट्टियों में की जा सकती है।
- **खेत की तैयारी :** खेत की तैयारी हेतु दो-तीन बार जुताई करके पाटा चला दें और खेत समतल कर दें। पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से एवं शेष जुताई देशी हल अथवा कल्टीवेटर से करनी चाहिए।
- **अनुशंसित प्रभेद :**

उन्नत प्रभेद	बुआई का समय	परिपक्वता अवधि (दिन)	औसत उपज (क्वि०/हे०)	तेल की मात्रा (अभ्युक्ति)
टी. 397	10 अक्टू.-15 नव.	120-130	10-12	40 प्रतिशत, पैरा फसल हेतु उपयुक्त
सुभ्रा	10 अक्टू.-15 नव.	130-135	10-12	44 प्रतिशत
गरीमा	10 अक्टू.-15 नव.	125-130	12-14	42 प्रतिशत
श्वेता	10 अक्टू.-15 नव.	140-145	10-12	41 प्रतिशत
शेखर	10 अक्टू.-15 नव.	135-140	12-15	43 प्रतिशत, पैरा फसल हेतु उपयुक्त
पार्वती	20 अक्टू.-20 नव.	140-146	10-12 (10 क्वि. रेशा)	42 प्रतिशत सिंचित खेती हेतु
मीरा	20 अक्टू.-20 नव.	135-140	10-12 (10 क्वि. रेशा)	42 प्रतिशत सिंचित खेती हेतु
रश्मि	20 अक्टू.-20 नव.	140-46	10-12 (10 क्वि. रेशा)	42 प्रतिशत सिंचित खेती हेतु

- **बीज दर :** 15–20 कि.ग्रा./हे.।
- **बीजोपचार :** बीज जनित रोगों एवं कीटों से फसल को बचाने के लिये फफूंदनाशक दवा से बीजों को उपचारित करना जरूरी है। बुआई से पहले बीजों को वैबिस्टीन चूर्ण से 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

- **बोने की दूरी :** पंक्ति-से-पंक्ति की दूरी 30 सें.मी. तथा पौधे-से-पौधे की दूरी 05 सें.मी.।
- **खाद एवं उर्वरक प्रबंधन :** 8–10 टन सड़ी हुई कम्पोस्ट खाद खेत की अंतिम जुताई के समय खेत में बिखेर देना चाहिए। सिंचित अवस्था में 60 किलो ग्राम नेत्रजन, 30 किलो ग्राम फास्फोरस एवं 20 किलो ग्राम पोटाश तथा असिंचित अवस्था में 50 किलो ग्राम नेत्रजन, 30 किलो ग्राम फास्फोरस एवं 20 किलो ग्राम पोटाश का प्रति हेक्टेयर प्रयोग करना चाहिए।
- **प्रयोग विधि :** सिंचित अवस्था में नेत्रजन की आधी मात्रा एवं स्फुर तथा पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय प्रयोग करें। नेत्रजन की शेष आधी मात्रा फूल लगने के समय उपरिवेशन करें। असिंचित अवस्था में नेत्रजन, स्फुर तथा पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय प्रयोग करें।
- **सिंचाई :** अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए मृदा में पर्याप्त नमी बनाये रखना आवश्यक है। सिंचित अवस्था में दो सिंचाई करें। पहली सिंचाई फूल आने से पूर्व तथा दूसरी सिंचाई फलियों के लगने के समय करें।

रोग एवं व्याधि :

- **लिनीसड मिज :** व्यस्क कीट सुन्दर नारंगी रंग का होता है। मादा मक्खी पौधों के फूलों की कली में अंडे देती है, जिससे शिशु निकल कर फूलों की कली को खाता है, जिसके कारण गॉल का निर्माण होता है। फलस्वरूप उत्पादन में काफी कमी आ जाती है।

प्रबन्धन

- फसल की अगात बुआई करें।
- फसल चक्र अपनायें।
- इमिडाक्लोप्रीड 17.8 एस०एल० का 1 मि०ली० प्रति 3 ली० पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

- आक्सीडेमेटान मिथाइल 25 ई०सी० 1 मिलीलीटर प्रति लीटर की दर से पानी में घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।

● **सेमीलूपर कीट :** इसका वयस्क पीलापन लिये हुए भूरे रंग का होता है। पंख पर सफेद रंग का निशान होता है। इसकी खास पहचान है कि ये अपने शरीर को वलय के आकार में मोड़कर चलता है। पिल्लू पौधों की पत्तियाँ खाकर नष्ट कर देता है, जिसके कारण पौधों पर फूलों एवं फलों की संख्या काफी कम हो जाती है।

प्रबन्धन

- खेत की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें।
- खेत को खर-पतवार से मुक्त रखें।
- आक्सीडेमेटान मिथाइल 25 ई०सी० का 1 मिलीलीटर प्रति लीटर की दर से पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

● **हरदा रोग :** इस रोग में पत्तियों पर पहले गुलाबी रंग का धाब्बा बनता है, जो बाद में तना एवं फली पर भी बनने लगता है। प्रभावित पत्तियाँ रंगहीन होकर सूख जाती है।

प्रबन्धन

- रोग रोधी किस्म का प्रयोग करें।
- खेत को खर-पतवार से मुक्त रखें।
- रोग ग्रसित पौधों को जला दें।
- मैन्कोजेब 75 घुलनशील चूर्ण का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।

● **निकाई-गुड़ाई एवं खरपतवार प्रबंधन :** तीसी फसल में 15 दिनों के अंदर अतिरिक्त पौधों की बछनी जरूर करें। बुआई के 25-30 दिनों तक खरपतवार से मुक्त रखें।

● **कटनी दौनी एवं भंडारण :** जब पौधों का तना पीला होने लगे तब फसल की कटनी प्रारम्भ कर देनी चाहिए। फसल कटनी के बाद कुछ दिन फसल सूखने के लिये छोड़ दें, इसके बाद दौनी कर दाने को अलग कर लें। दौनी के बाद उचित भण्डारण में भण्डारित करें।

Printed at Vidya Printers, Patna # 9234849923 E-mail : vidyaprintersjp@gmail.com